आपातकाल में सृजन फुलवारी

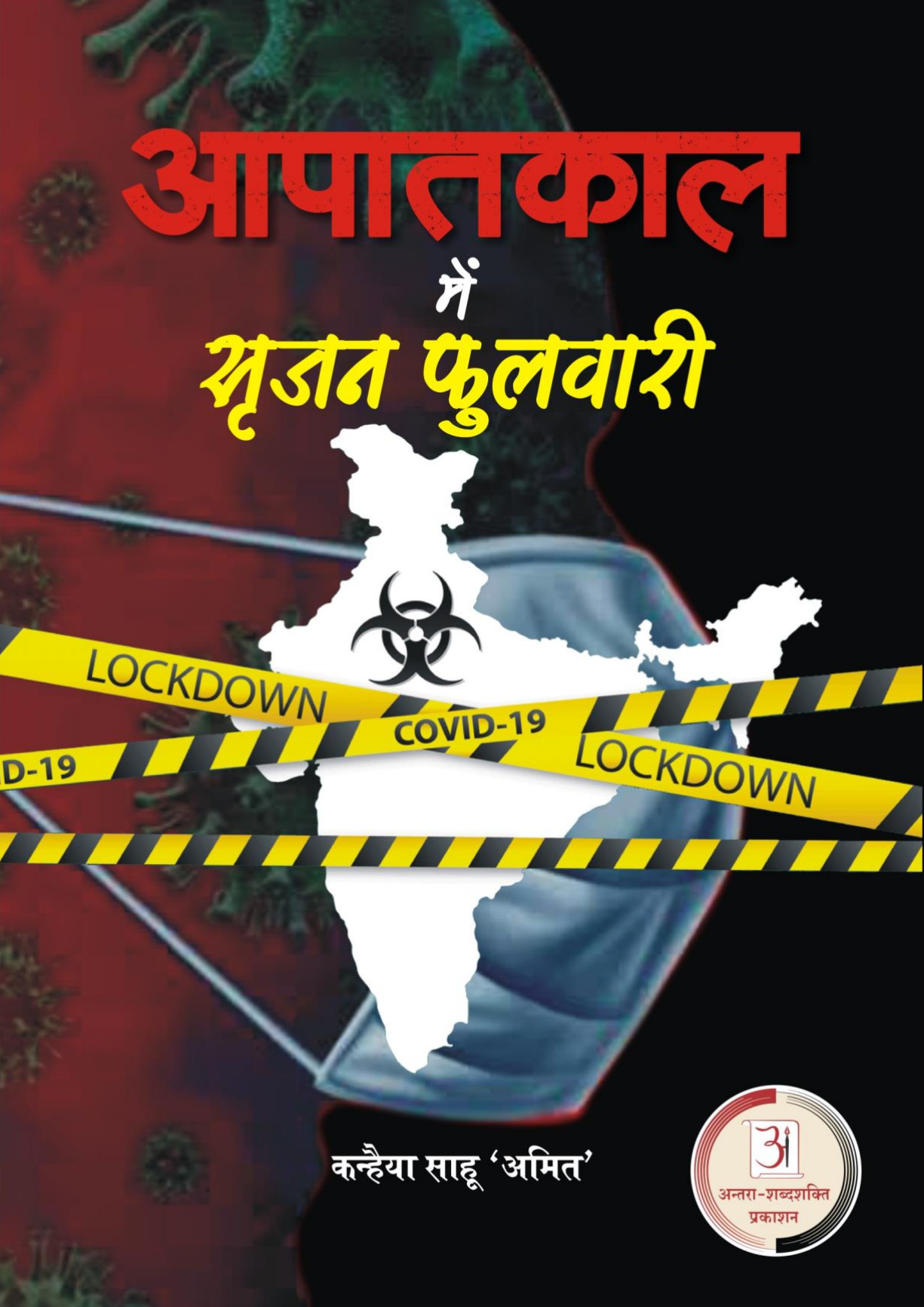

कन्हैया साहू 'अमित'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

कन्हैया साहू 'अमित'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-159-6

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, **कन्हैया साहू 'अमित'**

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY KANHAIYA SAHU AMIT

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	जग खुशहाल	6
2.	कोरोना वैश्विक कहर	7
3.	कोविड कोरोना	8
4.	कोरोना का हाहाकार	9
5.	जनजागरण	10
6.	मचा हुआ है हाहाकार	11
7.	आई विपदा भारी	12
8.	कालिक कोरोना	13
9.	धरती करे पुकार	14
10.	जो हासिल करना है कर लो	15
11.	आओ कुछ पल संवाद करें	16
12.	कोरोना पर कुण्डलियाँ-1	17
13.	कोरोना पर कुण्डलियाँ-2	18
14.	कोरोना पर कुण्डलियाँ-3	19
15.	कोरोना पर कुण्डलियाँ-4	20
16.	कोरोना पर कुण्डलियाँ-5	21

जग खुशहाल

सह कष्ट अपार, फिर मिले बहार।
निज कर्म सुधार, कुछ दिवस गुजार।।

तज माँसल स्वाद, सुन हिय अनुनाद।
देख भीड़भाड़, है बहुत बिगाड़।।

मुँह रखो रुमाल, मत करो सवाल।
मुख नाक लगाम, तब छींक तमाम।।

संक्रमित मरीज, बस एक तमीज।
संबंध समेट, नहिं निकट लपेट।।

एकांत गुजार, कर जग उपकार।
घुम नहीं स्वछंद, रह घर पर बंद।।

वायरस प्रसार, अंतरंग सार।
बनकर सुजान, दें तुरत ध्यान।।

घर बैठ काम, करजोड़ प्रणाम।
धो करतल पाँव, क्यों जीवन दाँव।

कुछ दिन मजबूर, यदि रहकर दूर।
यह बात महीन, रह स्वयं अधीन।।

है यह मनुहार, बनकर गुणकार।
संयम सुखीन, रह सखा विहीन।।

नहिँ दवा विशेष, भयमय परिवेष।
निज तन सँभाल, फिर जग खुशहाल।।

कोरोना वैश्विक कहर

दनुज प्रवृति हावी हुई, लिया प्रकृति से बैर।
सूक्ष्म जीव समझा गया, नहीं किसी की खैर।।

पहले करते हम फिरें, कुदरत से खिलवाड़।
रौद्र प्रकृति जब-जब हुई, बचने करें जुगाड़।।

कोरोना वायरस से, सारा जग भयभीत।
रोग ग्रस्त अति आदमी, अपनों से अपनीत।।

सर्दी खाँसी साथ यदि, आये तीव्र बुखार।
श्वास कष्टमय जब लगे, शीघ्र जाँच उपचार।।

रोग संक्रमण संचरण, गति है अतिशय तेज।
उचित दवा अब तक नहीं, रखिए बस परहेज।।

रोगी से दूरी रखें, अनिकट से हो बात।
साफ सफाई से अमित, कोविद को दें मात।।

नाक और मुँह को ढँकें, त्यागे माँसाहार।
जनसमूह से दूरियाँ, रहें मध्य परिवार।।

कोरोना वैश्विक कहर, समझें इसके मर्म।
सिर्फ स्वच्छता सार है, भोज्य पेय लें गर्म।।

सरकारी निर्णय अमित, करें समर्थन आप।
जन-जन के सहयोग से, मिटें व्याप्त संताप।।

कोविड कोरोना

आत्यंतिक आभार अब, कोविड कोरोना।
हमें सिखाकर तुम रहे, धैर्य नहीं खोना।

संयम साहस साधना, सुविचार सचेता।
व्याधि विमोक्ता आप ही, प्रतिमान प्रचेता।।
जनहित जनमन जागरण, व्यर्थ यहाँ रोना।
आत्यंतिक आभार अब, कोविड कोरोना।।-1

मदिरा माँसाहार के, तुम दोष दिखाये।
साफ सफाई क्यों भला, यह हमें सिखाये।।
और सिखा दी हर घड़ी, बस हाथ धोना।
आत्यंतिक आभार अब, कोविड कोरोना।।-2

जो भूले परिवार थे, लौट सदन आयें।
मातु पिता बच्चे बड़े, बस नेह लुटायें।।
वैश्विक विपदा काल में, इक सूत्र पिरोना।
आत्यंतिक आभार अब, कोविड कोरोना।।-3

सरकारी चेतावनी, कहना ही मानों।
खबर उड़ाई जो गई, सच भी तो जानों।।
मूल्यवान जीवन अमित, यूँ ही क्यों खोना।
आत्यंतिक आभार अब, कोविड कोरोना।।-4

कोरोना का हाहाकार

कोरोना का हाहाकार, रुकी यहाँ सबकी रफ्तार।।
आया यह कैसा जंजाल, बहुत बुरा है सबका हाल।।

अधिक व्यथित वे सारे लोग, माँस मद्य जो करते भोग।
साफ सफाई से हैं दूर, व्याधि करे उनको ही चूर।।

दवा नहीं है इसके नाम, पहुँचाता यह यम के धाम।
रहें सावधानी से आप, कम होगा इसका संताप।।

बार-बार अब धोयें हाथ, रहें सदन परिजन के साथ।
अंतर रखकर करिए बात, सघन निकटता देती घात।।

भोजन पानी लेवें गर्म, स्वच्छ रखें सब अपना कर्म।
संयम संबल सुख संसार, यही विजय का है आधार।।

वैश्विक संकट का है काल, व्यर्थ बजाते हो क्यों गाल।
घर से करें निकलना बंद, आप रहें निर्भय सानंद।।

जनजाणरण

फैली है घातक बीमारी, घर पर रहना है लाचारी।।
सरकारी कहना को मानों, यही भलाई है पहचानों।।1।।

भीड़भाड़ से रखना दूरी, जीवन रक्षा हेतु जरूरी।।
ढ़ाँक नाक मुँह, मास्क लगाओ, नहीं अकारण बाहर जाओ।।2।।

नहीं अभी तक बनी दवाई, रखना होगा साफ सफाई।।
संदेही की जाँच कराओ, अफवाह कभी मत फैलाओ।।3।।

भोजन ताजा हरदम खाना, बात सभी को यह समझाना।।
गर्म पेयजल पीते रहना, कष्ट तनिक है, सहते रहना।।4।।

दु:ख हमें कुछ नया सिखाता, कौन हितैषी, समय बताता।।
धीरज मन से कभी न खोना, डरकर भागेगी कोरोना।।5।।

खाओ बस भाजी तरकारी, कंदमूल फल शाकाहारी।।
मद्य माँस को अब तो त्यागो, विपत काल है, मन से जागो।।6।।

सहायता सेवा सुखदानी, आदर कोरोना सेनानी।।
पुलिस नर्स डॉक्टर सहकर्मी, मानवता के सजग सुधर्मी।।7।।

साफ सफाई जो हैं करते, फर्ज निभाते, खुशियाँ भरते।।
सब्जीवाला, लघु पंसारी, इनके हम हैं अति आभारी।।8।।

हैं समीप चाहे अनचाहें, धन्यवाद कह उसे सराहें।।
समय गुजारें घर में रहकर, खुशी मिलेगी पीड़ा सहकर।।9।।

हाथजोड़ कर 'अमित' निवेदन, करें नहीं अनहित उरभेदन।।
खुद ही सँभलें, राष्ट्र सँभालें, बाहर पड़े हुए हैं तालें।।10।।

मचा हुआ है हाहाकार

रक्तबीज सा यह कोरोना, पड़ी महामारी।
लड़नी हमको कठिन लड़ाई, मचा हुआ है हाहाकार।।

वैश्विक है यह अजब समस्या, तीव्र संक्रमण, भीषण जाल।
चीन जनित कोरोना कोविद, बीमारी बन आया काल।।
उलझ गया विज्ञान तंत्र भी, ढूँढ रहा इसका उपचार।
रक्तबीज सा यह कोरोना, पड़ी महामारी सी मार।।1।।

छेड़ा कुदरत को मनमर्जी, उपजा उर में अनुचित लोभ।
सृष्टि सदा यह पर हितकारी, उठा नहीं क्यों मन में क्षोभ।
बाहुबली बन फिरता मानव, दिखता आज खड़ा लाचार।
रक्तबीज सा यह कोरोना, पड़ी महामारी सी मार।।2।।

पालन करें लाकडाउन का, लेकर सरकारी संज्ञान।
व्याधि भयावह, नहीं दवाई, अभी कारगर यही निदान।।
घर में रहकर काम करें सब, 'अमित' सुखद संयम सहकार।
रक्तबीज सा यह कोरोना, पड़ी महामारी सी मार।।3।।

रक्तबीज सा यह कोरोना, पड़ी महामारी सी मार।
लड़नी है अति कठिन लड़ाई, मचा हुआ है हाहाकार।।

आई विपदा भारी

कोहराम कलिकानी करती, आई विपदा भारी।
त्राहि-त्राहि कर रहे सभी हैं, यह कैसी बीमारी।।

खानपान परिणाम विकट यह, उटपटांग जो खाते।
नहीं बिगड़ती दशा हमारी, खादनीय अपनाते।।
सदा सुरक्षित कंद मूल फल, भोजन शाकाहारी।
कोहराम कलिकानी करती, आई विपदा भारी।।1।।

वातावरण प्रदूषित अतिशय, भूले साफ सफाई।
कूड़ा कर्कट कारण कतिपय, रोगों की बहुताई।
फेंक गंदगी आसपास हम, बनते क्यों अभिचारी।
कोहराम कलिकानी करती, आई विपदा भारी।।2।।

रोगी से हो नहीं निकटता, सतत हाथ को धोना।
तालाबंदी से ही डरकर, जायेगा कोरोना।।
अफवाहों से दूर रहें हम, काज करें हितकारी।
कोहराम कलिकानी करती, आई विपदा भारी।।3।।

कोहराम कलिकानी करती, आई विपदा भारी।
त्राहि-त्राहि कर रहे सभी हैं, यह कैसी बीमारी।।

कालिक कोरोना

कालकर्णिका बनकर आई, कालिक कोविद कोरोना।
कालमूर्ति कलिमल कलियुग का, पसर रही कोना-कोना।

सहमा-सहमा यह जग सारा, घातक देख महामारी।
सर्दी खाँसी साँस फूलना, सन्ननिकटता संचारी।।
विकट समस्या आन पड़ी है, धैर्य नहीं अब खोना।
मास्क लगाएँ स्वस्थ रहें सब, मत भूलें हाथों को धोना।
कालकर्णिका बनकर आई, कालिक कोविद कोरोना।।1।।

भीड़भाड़ से बचकर रहना, लोगों से रखना दूरी है।
यही कारगर युक्ति अभी तो, सबके लिए जरूरी है।।
संकटमोचन बनो स्वयं ही, छोड़ व्यर्थ का रोना-धोना।
कालकर्णिका बनकर आई, कालिक कोविद कोरोना।।2।।

सहयोग अपेक्षित जन-जन से, सरकार कहे जो मानों।
राष्ट्र सुरक्षित, जन्य पुष्ट हों, निहित भलाई को जानों।।
'अमित' नागरिक सजग बनो तुम , भ्रम बीज न कभी बोना।
कालकर्णिका बनकर आई, कालिक कोविद कोरोना।।3।।
कालमूर्ति कलिमल कलियुग का, पसर रही कोना-कोना।

धरती करे पुकार

शीत ग्रीष्म वर्षा हवा, कुदरत के उपनाम।
मटमैली मिट्टी अमित, धरती धीरज धाम।1।

सरिता सागर सीपियाँ, राख रेणु रज रेत।
धरती के ये रूप ये, खाड़ी खेड़ा खेत।2।

जलधर जीवनदायिनी, नदियाँ पोखर कूप।
धूसर धात्री धारिणी, अनुपम अमित अनूप।3।

कोख कहीं ज्वालामुखी, कहीं मिष्ट जलधार।
अनल अनिल मरु आपगा, पृथ्वी प्रिय परिवार।4।

सौम्य सुमन सुरभित सजे,पग-पग पादप पेड़।
खुशियों की ये क्यारियाँ, मटिया मण्ड़ित मेड़।5।

वसुंधरा अति विमलता, वरदानी व्यवहार।
मिथक नहीं ये कल्पना, कुदरत ही करतार।6।

वसुधा परहितकारिणी, हार्दिक है हितवाद।
देह गलाकर खुद धरा, बनती पोषक खाद।7।

सुखमय शुभकर सर्वदा, धरती धानी गोद।
मानव लखलुट लालची, हाथ स्वयं जड़ खोद।8।

नन्हा कण तरुवर हुआ, पृथ्वी पोषित बीज।
जड़ जमीन को जो भुला, पलभर में नाचीज।9।

खूब खजाना पार्थिवी, नीर अन्न आहार।
दैहिक दोहन से दुखी, धरती करे पुकार।10।

जो चाहे हासिल कर लो

सब संभव है इस जीवन में, जो चाहो है हासिल कर लो।
उठो पथिक अब डगर भरो बस, पथ को ही मंजिल कर लो।।

घोर अँधेरा राते लंबी, आश दीप का जब बुझता।
देख जुगनुओं की कोशिश को, युक्ति हृदय को फिर सुझता।।
तोड़ निराशा की जंजीरें, जुगनू सा काबिल कर लो।1।
सब संभव है इस जीवन में, जो चाहो हासिल कर लो।।

सुख-दुख आते जाते रहते, मन को इसका आदी करना।
सुख में सुखकर संयम धीरज , दुख में मत आहें भरना।।
खुशियों के इस उपवन में, कंटक भी शामिल कर लो।2।
सब संभव है इस जीवन में, जो चाहो हासिल कर लो।।

मन से हारा हार गया सब, जीता जो जीता मन से।
अपना श्रम ही सच्चा मोती, फूटे यह सीकर बनके।।
आलस से अब नाता कैसा, अमित स्वयं आबिल कर लो।3।
सब संभव है इस जीवन में, जो चाहो हासिल कर लो।
उठो पथिक अब डगर भरो बस, पथ को ही मंजिल कर लो।।

आओ कुछ पल संवाद करें

परिजन परजन प्रीति बढ़ाने, कुछ भूल चलें, कुछ याद करें।
संबंधो के बंध न छूटे, आओ कुछ पल संवाद करें।।

सिमटी दुनिया मुट्ठी भर में, प्रतिवासी से पर दूर रहे।
मानमनौती मिथक दिखावा, मद में मनभर तुम चूर रहे।।
मनमर्जी मतवाला बनकर, कभी न ऐसा उन्माद करें।
संबंधो के बंध न छूटे, आओ कुछ पल संवाद करें।।1।।

सुख के साधन जीवन सिमटा, विषय विकारी तन व्याधि घना।
समझ सका कब क्यों है जीना, अर्थहीन सा बन ताड़ तना।
त्याग हृदय से भाव संकुचित, मन की कुटिया प्रासाद करें।
संबंधो के बंध न छूटे, आओ कुछ पल संवाद करें।।2।।

मनमुटाव पर मनमंथन हो, बातचीत क्यों है बंद पड़ा।
अपनों का अपनापन भूला, अहंकारवश हठ धरे अड़ा।।
लाभ-हानि को छोड़ जरा अब, प्रेमपुलक हिय अनुनाद करें।
संबंधो के बंध न छूटे, आओ कुछ पल संवाद करें।।3।।

बाधक बनते बातचीत में, ऐसे बाधित सब गाँठ गला।
अमित आसुरी शक्ति बढ़े जब, अंतर्मन में होलिका जला।
राग-रंग छल द्वेष मिटाकर, अपने को अब प्रहलाद करे।
संबंधो के बंध न छूटे, आओ कुछ पल संवाद करें।।4।।

परिजन परजन प्रीति बढ़ाने, कुछ भूल चलें, कुछ याद करें।
संबंधो के बंध न छूटे, आओ कुछ पल संवाद करें।।

कोरोना पर कुण्डलियाँ

साफ सफाई नित रखें, तन-मन अरु घर द्वार।
फिर विषाणु पनपे नहीं, सतर्कता उपचार।।
सतर्कता उपचार, स्वच्छ रखलें हर कोना।
रुके रोग संचार, प्लेग डेंगू कोरोना।
कहे अमित कविराज, स्वच्छता स्वयं भलाई।
गाँठ बाँध लें बात, रखें हम साफ सफाई।1।

रहकर कुछ दिन निज सदन, समय गुजारें आप।
यह उपाय उम्दा उचित, कम हों मेल मिलाप।।
कम हों मेल मिलाप, काज घर पर निपटाओ।
जब तक तालाबंद, बैठ कर्तव्य निभाओ।।
कोरोना प्रतिकार, कष्ट कुछ जगहित सहकर।
अमित कहे कथनीय, समय काटें घर रहकर।2।

धोना पल-पल हाथ को, अभिवादन करजोड़।
अनिकट वार्तालाप हो, यही अभी है तोड़।।
यही अभी तक तोड़, नाक मुँह मास्क लगाना।
खाँसी छींक बुखार, शीघ्र ही जाँच कराना।।
कहे अमित कविराज, यही लक्षण कोरोना।
पीयो पानी गर्म, रगड़ हाथों को धोना।3।

भरा खजाना खोल दो, मंदिर, मस्जिद, चर्च।
मानव सेवा भाव में, हो जाये अब खर्च।।
हो जाये अब खर्च, दान की है जो पेटी।
जन-जन कल्यानार्थ, पहल हो धर्म कमेटी।।
संकट का यह काल, देर मत तनिक लगाना।
अमित रखे प्रस्ताव, देशहित खोल खजाना।4।

बौना बाहुबली लगे, कैसा आया काल।
बहुमानी छोटा बड़ा, सबके बारह हाल।।
सबके बारह हाल, पंगु बन घर में बैठे।
शक्तिमान बलहीन, नहीं अब कोई ऐंठे।।
कहे अमित कविराज, प्रकृति का मनुज खिलौना।
सूक्ष्म जीव ने आज, बनाया जग को बौना।5।

भागे कोरोना सहज, रक्षित होगा देश।
कहना जन-जन मानकर, घर पर रहें विशेष।।
घर पर रहें विशेष, संक्रमण को हम रोकें।
रहें भीड़ से दूर, पास आने से टोकें।।
अमित दिवस इक्कीस, गुजारें सहकर आगे।।
मानें सभी सलाह, तभी कोरोना भागे।6।

अनदेखा करिए नहीं, रहिए आप मकान।
लापरवाही क्यों भला, करते हैं श्रीमान।।
करते हैं श्रीमान, कहो कैसे समझायें।
संकट होंगे दूर, सुरक्षा यदि अपनायें।
कहे अमित यह बात, सबल है लक्ष्मण रेखा।
पालन हों हर हाल, कीजिए मत अनदेखा।7।

दूरी है अनिवार्य अब, करना यदि सहयोग।
व्याधि संक्रमण यह जनित, लग सकता है रोग।
लग सकता है रोग, रखो दो मीटर अंतर।
कोरोनो प्रतिकार, कारगर है यह मंतर।।
कहे अमित यह आज, क्रिया तब होगी पूरी।
जन समूह से खास, बनाकर रखना दूरी।8।

धोते रहिए नित्य ही, रगड़-रगड़ कर हाथ।
समय बिताएँ निज सदन, रह परिजन के साथ।।
रह परिजन के साथ, नेह बरसायें ज्यादा।
पीयें पानी गर्म, करें भोजन बस सादा।।
हुआ संक्रमण तीव्र, आप क्यों धीरज खोते।
अमित सुरक्षा सार, हाथ को रहिए धोते।9।

उड़ी उड़ाई बात ही, बन जाती अफवाह।
भ्रम मत फैलाइये, किया गया आगाह।।
किया गया आगाह, सत्य का पता लगायें।
खबर हुआ यदि पुष्ट, तभी इसको फैलायें।।
कहे अमित कविराज, व्यर्थ है मिथक बड़ाई।
हो सकता है जेल, बात जो उड़ी उड़ाई।10।

मंथर मति के लोग ही, करें अराजक काज।
मुट्ठी भर की मूर्खता, लज्जित होय समाज।
लज्जित होय समाज, करें ये कृत्य अगोचर।
अविवेकी विक्षिप्त, करें सब गुड़ का गोबर।।
डॉक्टर से प्रतिकार, मूर्ख बरसाते पत्थर।
देवदूत पर थूँक, वहीं हैं जो मति मंथर।11।

दीप जलाएँ आप भी, है प्रधान मनुहार।
तमा तमस में नौ बजे, नौ दीये उजियार।।
नौ दीये उजियार, जले हर द्वार निकेतन।
यही एकता मंत्र, राष्ट्र हित बनें सचेतन।।
कहे अमित कविराज, हृदय में आश जगाएँ।
देनें शुभ संकेत, आज नौ दीप जलाएँ।12।

कठिन परीक्षा की घड़ी, होती अब आरंभ।
अधिक कड़ाई और अब, मत भरिए दम दंभ।।
मत भरिए दम दंभ, बैठकर घर में रहिए।
तीन मई तक बंद, लाकडाउन को सहिए।।
करे अमित अरदास, स्वयं कीजिए समीक्षा।
होवे कहीं न चूक, ले रहा समय परीक्षा।13।

पुण्य कमाएँ आप भी, देकर कुछ अभिदान।
बनने भागीदार जी, जुड़िए इस अभियान।।
जुड़िए इस अभियान, दीजिए रुपिया पैसा।
यथाशक्ति सहयोग, समझकर अपने जैसा।।
करे अमित अरदास, व्यर्थ फोटो न खिंचाएँ।
ढ़ोंग दिखावा छोड़, गुप्त दें, पुण्य कमाएँ।14।

अलकोहल धोने लगा, आज हमारे हाथ।
बदनामी का दाग भी, कभी लगा था माथ।
कभी लगा था माथ, बना यह अब उपचारी।
सर्वश्रेष्ट यह युक्ति, हुआ जन-जन हितकारी।।
करे अमित अरदास, कहें मत अभी हलाहल।
कष्टनिवारक कार्य, आज करता अलकोहल।15।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

कन्हैया साहू 'अमित'

भाटापारा (छत्तीसगढ़)

Mobile - 920252055

आपातकाल सर्वदा कुछ न कुछ सीख देती ही है। मानव के धैर्य और समझ की परीक्षा भी यह बखूबी लेती है। लाकडाउन भी एक प्रकार का आपातकाल ही है जिसने विपत्ति के साथ-साथ कुछ सुअवसर भी दिए हैं। यह बात अलग है कि कोई इसे आफत मानकर कोसता बैठा है तो कोई इसे सौभाग्य मानकर दोनों हाथों से भुना रहा हैं, अपने अंदर निहित प्रतिभा को परिष्कृत करने का कार्य इस आपातकाल में करके।

मनुष्य जन्मजात किसी न किसी हुनर को अपने साथ लेकर जन्म लेता है पर सुअवसर के अभाव में उसके साथ ही मृत भी हो जाती है। प्रतिभा को एक सुयोग्य अवसर की आवश्यकता रहती ही है। यह आपातकाल भी सभी को धैर्य, सहयोग, सेवा, सत्कार और प्रकृति का महत्व समझाते हुए सुअवसर प्रदान कर रही है। आपातकाल के इस विकट परिस्थितियों को सुसमय में बदलने का पुनीत कार्य अंतरा शब्द शक्ति समूह के द्वारा किया जा रहा है। इस विषम प्रतिकूल समय में साहित्य सृजन का सुअवसर प्रदान करके वे रचनाधर्मी प्रतिभाओं के लिखित रचनाओं को निरूशुल्क प्रकाशित करके। इस सराहनीय साहित्य सेवा हेतु अंतरा शब्द शक्ति परिवार को हृदयतल से कोटिशरू आभार।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-159-6

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/